सुलतानपुर जिले के लम्भुआ ब्लाक में माध्यमिक शिक्षा के प्रति अध्ययनरत बालिकाओं की मनोवृत्ति का अध्ययन

कमलापति तिवारी,
ग्लोबल इंस्टीट्यूट ऑफ एजुकेशन

बालिका शिक्षा आज राष्ट्र के सामने एक विकट समस्या के रूप में खडी है। विगत कुछ वर्षों से शिक्षा के क्षेत्र में बालिकाओं की सहभागिता बढी है फिर भी संतोषजनक नहीं है। आज भी गांवों में बहुत सी ऐसी बालिकाएँ हैं जो पढने की इच्छुक तो हैं पर पढ नहीं पा रही हैं और जो पढ रही हैं वह शिक्षा में पूरी तरह से रूचि नहीं ले रही हैं। शिक्षा के क्षेत्र में बालिकाओं को अग्रसर करने हेतु सरकार ढेर सारी सुविधाएँ मुहैया करवा रही है फिर भी परिणाम अपेक्षित नहीं प्राप्त हो पा रहे हैं । प्रस्तुत शोध द्वारा माध्यमिक शिक्षा प्राप्त कर रही बालिकाओं की मनोवृत्ति जानकर उन कारणों का पता लगाया जा सकता है ,समस्याओं की तह तक पहुँचा जा सकता है। उनके विकास के प्रति जागरूकता विकसित किया जा सकता है तथा उन समस्याओं के निवारण हेतु उपाय ढूँढा जा सकता है । इस प्रकार प्रस्तुत शोध बालिकाओं की शिक्षा के क्षेत्र में एक महत्वपूर्ण और सकारात्मक कदम होगा।

मुख्य शब्द *– माध्यमिक शिक्षा, मनोवृत्ति*

प्रस्तावना

प्रत्येक विकसित समाज के निर्माण में स्त्री–पुरूष दोनों की ही सहभागिता आवश्यक है परन्तु यह एक बिडम्बना ही है कि संविधान में भले ही स्त्रियों को पुरूषों के बराबर समानता का अधिकार दे दिया हो परन्तु आज भी वो कई सामाजिक रूढ़ियों, मान्यताओं में जकड़ी हुई हैं। आज भी वो अपने विकास में स्वयं को अक्षम पाती हैं। बचपन से ही उन्हें कई रूढ़ियों एवं मान्यताओं में जकड़ दिया जाता है जिससे न तो वह सही मायने में शिक्षा प्राप्त कर पाती हैं और न ही अपने इस जीवन का सही महत्व ही समझ पाती हैं।

केन्द्र सरकार एवं राज्य सरकार के तमाम प्रयासों के बावजूद भी बालिका शिक्षा को वो स्तर नहीं प्राप्त हो रहा है जितना कि उनकी शिक्षा पर धन व्यय किया जा रहा है। उनकी समस्यायें शुरू से ही प्राथमिक कक्षाओं से ही दिखाई देने लगती हैं। तमाम सरकारी प्रलोभनों से विद्यालय में उनका नामांकन तो हो जाता है लेकिन विद्यालय में उनकी उपस्थिति बहुत कम रहती है। इससे न तो वह ठीक से प्राथमिक शिक्षा ही ग्रहण कर पाती हैं और न ही वो सही मायने में शिक्षित ही हो पाती हैं। बालिका शिक्षा की यही दशा पूर्व माध्यमिक कक्षाओं में भी है।

इसी तरह माध्यमिक कक्षाओं तक पहुँचते ही बड़ी होने के साथ–साथ घर के काम–काज की

जिम्मेदारियों का बोझ भी उनके ऊपर बढ़ने लगता है। अभिभावकों की "जितने हाथ उतनी आय" की सोच उनकी माध्यमिक शिक्षा को प्रभावित करती है। घर की आर्थिक स्थिति भी उनको काम करने के लिए मजबूर कर देती है, जिससे वे शिक्षा की तरफ ध्यान नहीं दे पाती हैं। साथ ही साथ कई सामाजिक समस्यायें भी उनको शिक्षा ग्रहण करने में उनके सामने बाधा के रूप में उपस्थित होने लगती हैं। जैसे–छुआछूत, बाल–विवाह, दहेज प्रथा इत्यादि समस्यायें उनकी शिक्षा प्राप्ति के मार्ग में बाधक बन जाती हैं इसके साथ शिक्षा व्यवस्था की भी कुछ खामियाँ बालिकाओं की शिक्षा के प्रति उनकी सोच को प्रभावित करने लगती हैं। जैसे– ग्रामीण क्षेत्रों के शैक्षिक पाठ्यक्रम में नवाचार का अभाव। इनमें कम्प्यूटर शिक्षा, खेलकूद, शिक्षा में अंग्रेजी माध्यम का अभाव इत्यादि के कारण आगे चलकर वे शहरी क्षेत्रों में पढ़ी लड़कियों के बीच अपने आप को ठगा हुआ सा महसूस करती हैं, जिससे असफल होने पर आगे शिक्षा के प्रति उनकी सोच, उत्सुकता, रूचि सब समाप्त हो जाती है। इसी तरह विद्यालयीय समस्यायें भी उनकी शिक्षा प्राप्त करने की रूचि को प्रभावित करने लगती हैं जैसे कि आज भी ग्रामीण क्षेत्रों में माध्यमिक विद्यालयों का अभाव है। उन्हें माध्यमिक शिक्षा ग्रहण करने के लिए घर से काफी दूर जाना पड़ता है। साधन के अभाव में वो प्रतिदिन समय से विद्यालय नहीं पहुँच पाती हैं। इसके बाद भी विद्यालयी समस्यायें अर्थात् विद्यालय में प्रशिक्षित शिक्षकों का अभाव, विद्यालय का कठोर अनुशासन, शिक्षकों का अमानवीय व्यवहार, विद्यालय का शैक्षिक वातावरण भी उनकी रूचि को प्रभावित करने लगता है, जिससे वो माध्यमिक शिक्षा के प्रति मन से नहीं जुड़ पाती हैं।

अध्ययन के उद्देश्य –

प्रस्तुत शोध निम्नलिखित उदेश्यों को प्राप्त करने के लिए किया गया है–

- माध्यमिक शिक्षा के प्रति बालिकाओं की प्रेक्षित मनोवृत्ति में विभिन्न कारकों यथा–सामाजिक, आर्थिक, विद्यालयीय एवं पाठ्यक्रम का सापेक्षतः प्रभाव आंकलित करना।
- माध्यमिक शिक्षा के प्रति बालिकाओं की मनोवृत्ति का पता लगाना।

शोध की परिकल्पना –

प्रस्तुत शोध कार्य में निम्नलिखित शोध परिकल्पना का निर्माण किया गया है–

मुख्य परिकल्पना –

माध्यमिक शिक्षा के प्रति ग्रामीण बालिकाओं की मनोवृत्ति पर आर्थिक, सामाजिक, विद्यालयीय एवं पाठ्यक्रम पर आधारित पक्षों का प्रभाव पड़ता है।

शून्य परिकल्पना –

माध्यमिक शिक्षा के प्रति ग्रामीण बालिकाओं की मनोवृत्ति पर आर्थिक, सामाजिक, विद्यालयीय एवं पाठ्यक्रम का प्रेक्षित प्रभाव संयोगवश है।

प्रस्तुत शोध से सम्बन्धित कुछ शोधकार्यों का विवरण –

प्रस्तुत अध्ययन की समस्या से सम्बन्धित किये गये कुछ प्रमुख शोधकार्यों का विवरण निम्नवत् है–

- **मित्रा, ए0 एल0** ऐजुकेशन आफ वोमेन इन इण्डिया फ्राम 1921 टू 1955 पी.एच.डी. एजुकेशन, सागर यूनिवर्सिटी 1961

इनके अध्ययन का उद्देश्य था–

- ❒ स्त्री शिक्षा के विकास में अवरोधक कारणों का पता लगाना।
- ❒ भारतीय स्त्री को प्राप्त शैक्षिक सुविधाओं एवं उनकी उपयोगिताओं का पता लगाना।

अपने अध्ययन के आधार पर मित्रा जी पाते हैं कि भारत में सभी तरफ स्त्री शिक्षा का तेजी से प्रसार हुआ। स्त्रियों के लिए विभिन्न राज्यों से राज्य समितियों का गठन किया गया है। स्त्रियों हेतु विषेश पाठ्यक्रमों जैसे–गृहशिक्षा, कला, चित्रकारी, संगीत इत्यादि की आवश्यकता पर भी बल दिया जाता है। सहशिक्षा संस्थानों को अनेक शैक्षिक सुविधाएं प्रदान की जा रही हैं।

विनीता (2002) "कानपुर नगर के हायर सेकेन्ड्री स्तर के अनुसूचित जाति एवं गैर अनुसूचित जाति के बालक बालिकाओं की शैक्षिक अभिवृत्ति, बुद्धि, सामाजिक, आर्थिक स्तर एवं शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन" इनके अध्ययन का उददेश्य था कि–

- ❒ हायर सेकेन्ड्री स्तर के बच्चों की बुद्धि सामाजिक, आर्थिक स्तर एवं शैक्षिक उपलब्धि का पता लगाना।

अपने अध्ययन के दौरान इन्होंने पाया कि छात्र एवं छात्राओं के मध्य शैक्षिक अभिवृत्ति और बुद्धि में सामञ्जस्य है तथा उनके मध्य सामाजिक एवं आर्थिक स्तर में उतार–चढ़ाव तथा अन्तर के कारण शैक्षिक उपलब्धि में भी अन्तर दिखाई देता है।

अध्ययन विधि –

प्रस्तुत शोध में वर्णनात्मक सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है। इस विधि का प्रमुख कार्य यथार्थ के विभिन्न पक्षों का विवरण देना है।

अध्ययन की जनसंख्या –

प्रस्तुत शोध कार्य में बालिकाओं की मनोवृत्ति का अध्ययन करने के लिए सुलतानपुर जिले के लम्भुआ ब्लाक के मान्यता प्राप्त माध्यमिक विद्यालयों को जनसंख्या के रूप में चयनित किया गया।

प्रतिदर्श चयन विधि –

प्रस्तुत अध्ययन के सन्दर्भ में शोधार्थी ने उपलब्ध जनसंख्या में से 100 प्रतिदर्शों का चयन असम्भाव्यता पर आधारित सोद्देश्य प्रतिचयन विधि से किया।

प्रतिदर्श हेतु संस्था का चयन –

प्रस्तुत शोधकार्य में प्रतिदर्श के लिए चयनित माध्यमिक विद्यालयों एवं उनसे सोद्देश्य प्रतिचयन विधि से चयनित प्रतिदर्श का विवरण निम्नवत् है–

क्रम सं.	चयनित माध्यमिक विद्यालय	छात्राओं की संख्या
1.	वी. एस. इण्टर कालेज भरखरे, सुलतानपुर	20
2.	पब्लिक इण्टर कालेज चौकिया, सुलतानपुर	20
3.	सर्वोदय इण्टर कालेज लम्भुआ, सुलतानपुर	20
4.	विवेकानन्द बालिका इण्टर कालेज, सेमरी राजापुर, लम्भुआ, सुलतानपुर	20
5.	जागृति इण्टरमीडिएट कालेज, नरसिंहपुर, रघुनाथपुर, सुलतानपुर	20
	योग	100

परीक्षण का चयन –

प्रस्तुत शोध में शोधार्थी ने विषय विशेषज्ञों की सहायता से स्वनिर्मित माध्यमिक शिक्षा के प्रति बालिकाओं की मनोवृत्ति मापनी का निर्माण किया।

परीक्षण परिचय –

स्वनिर्मित मनोवृत्ति मापनी एक शाब्दिक परीक्षण है। इसके द्वारा माध्यमिक विद्यालयों के कक्षा 9 एवं 10 में अध्ययनरत बालिकाओं की मनोवृत्ति का मापन किया गया है।

स्वनिर्मित मनोवृत्ति मापनी में कुल 32 प्रश्न हैं। जिसमें 15 प्रश्न सकारात्मक है तथा 17 प्रश्न नकारात्मक। प्रत्येक प्रश्न के आगे सर्वाधिक सहमत, सहमत, अनिश्चित, असहमत, सर्वाधिक असहमत विकल्पों के पाँच खाने बने हैं, जिसमें सही का चिन्ह अंकित करना है।

विश्वसनीयता –

शोध के उपकरण की विश्वसनीयता अर्द्धविच्छेदन विधि (Split Half Method) द्वारा निकाली गयी जिसका मान .74 प्राप्त हुआ। अतः उपकरण विश्वसनीय है।

वैधता –

उपकरण की वैधता के लिए शिक्षाशास्त्र तथा मनोविज्ञान के क्षेत्र से सम्बन्धित विभिन्न विशेषज्ञों से कई चरण विमर्ष के तत्पश्चात् उनके द्वारा एकांशों को अन्तिम रूप दिये जाने के पश्चात् ही उपकरण वैध माना गया। इस प्रकार विशेषज्ञों द्वारा इसकी रूप वैधता एवं विषयगत वैधता सुनिश्चित की गई।

परीक्षण का फलांकन –

प्रस्तुत शोध में परीक्षण का फलांकन निम्नलिखित प्रकार से किया गया है–

सकारात्मक एकांश

1, 3, 5, 6, 8, 11, 12, 17, 22, 23, 28, 29, 30, 31, 32.

नकारात्मक एकांश

2, 4, 7, 9, 10, 13, 14, 15, 16, 18, 19, 20, 21, 24, 25, 26, 27.

छात्राओं के उत्तरों पर प्रत्येक सकारात्मक पद के लिए क्रमशः 5, 4, 3, 2, 1 तथा नकारात्मक पद के लिए क्रमशः 1, 2, 3, 4, 5 अंक प्रदान किये गये।

सांख्यिकीय प्रविधियाँ –

प्रस्तुत शोध अध्ययन में माध्यमिक शिक्षा के प्रति बालिकाओं की मनोवृत्ति का पता लगाने के लिए नान– पैरामीटिक प्रकार की सांख्यिकी का प्रयोग किया गया है। जिसे कई स्क्वेयर (χ^2) के नाम से पुकारा जाता है।

प्रदत्तों का प्रस्तुतीकरण विश्लेषण एवं विवेचन –

प्रस्तुत शोध से सम्बन्धित समस्या के अनुरूप ही शोधार्थी ने सम्बन्धित प्रदत्तों को विभिन्न उपकरणों के माध्यम से सावधानीपूर्वक एकत्रित करके उनका प्रस्तुतीकरण, विश्लेषण एवं विवेचन इस प्रकार किया–

माध्यमिक शिक्षा के प्रति बालिकाओं की प्रेक्षित मनोवृत्ति में विभिन्न कारकों यथा–सामाजिक, आर्थिक, विद्यालयीय एवं पाठ्यक्रम का सापेक्षतः प्रभाव आंकलित करना।

H1 माध्यमिक शिक्षा के प्रति ग्रामीण बालिकाओं की मनोवृत्ति पर आर्थिक, सामाजिक, विद्यालयीय एवं पाठ्यक्रम पर आधारित पक्षों का प्रभाव पड़ता है।

Ho माध्यमिक शिक्षा के प्रति ग्रामीण बालिकाओं की मनोवृत्ति पर आर्थिक, सामाजिक, विद्यालयीय एवं पाठ्यक्रम का प्रेक्षित प्रभाव संयोगवश है।

काई स्क्वेयर द्वारा माध्यमिक शिक्षा के प्रति बालिकाओं की मनोवृत्ति का मापन

चर	आवृत्तियाँ	उच्च	मध्यम	निम्न	योग
अभिवृत्ति	प्रेक्षित आवृत्ति प्रत्याशित आवृत्ति	20 (16)	47 (68)	33 (16)	100
स्वातंत्र स्तर – 2,		काई वर्ग – 25.54,			

काई स्क्वेयर से प्राप्त मान के अवलोकन से ज्ञात होता है कि25.54 मान काई स्क्वेयर के क्रान्तिक मान में स्वातंत्र स्तर 2 पर 0.05 एवं 0.01 विश्वास स्तर पर प्राप्त मान क्रमशः 5.99 एवं 9.21 से वहुत ज्यादा है।

अतः माध्यमिक शिक्षा के प्रति उक्त स्तर पर शिक्षा प्राप्त कर रही ग्रामीण बालिकाओं की मनोवृत्ति पर आर्थिक, सामाजिक, विद्यालयीय एवं पाठ्यक्रम का प्रेक्षित प्रभाव संयोगवश नहीं है। अतः Ho "माध्यमिक शिक्षा के प्रति ग्रामीण बालिकाओं की मनोवृत्ति पर आर्थिक, सामाजिक, विद्यालयीय एवं पाठ्यक्रम का प्रेक्षित प्रभाव संयोगवश है" को निरस्त तथा H1 "माध्यमिक शिक्षा के प्रति ग्रामीण बालिकाओं की मनोवृत्ति पर आर्थिक, सामाजिक, विद्यालयीय एवं पाठ्यक्रम पर आधारित पक्षों का प्रभाव पड़ता है" को स्वीकृत किया गया अर्थात् माध्यमिक शिक्षा के प्रति ग्रामीण बालिकाओं की मनोवृत्ति पर आर्थिक, सामाजिक, विद्यालयीय एवं पाठ्यक्रम पर आधारित पक्षों का प्रभाव पड़ता है।

माध्यमिक शिक्षा के प्रति ग्रामीण बालिकाओं की मनोवृत्ति पर प्रभाव डालने वाले आर्थिक, सामाजिक, विद्यालयीय एवं पाठ्यक्रम सम्बन्धित कारणों को तालिका द्वारा प्रदर्शित किया है ।

तालिका संख्या–1: आर्थिक कारकों का बालिकाओं की मनोवृत्ति पर प्रभावः

एकांश	सर्वाधिक सहमत	सहमत	अनिश्चित	असहमत	सर्वाधिक असहमत	कुल छात्राएं
2	0	60	6	18	16	100
22	82	16	2	0	0	100
23	42	42	8	2	6	100
24	4	24	4	50	18	100
31	58	10	4	20	8	100
योग	186	152	24	90	48	500
प्रतिशत	37.2%	30.4%	4.8%	18%	9.6%	

तलिका संख्या 1 के प्राप्ताकों से स्पष्ट होता है कि आर्थिक कारणों में ट्यूशन कोचिंग फीस इत्यादि से सम्बन्धित प्रश्न पर " सर्वाधिक सहमत" बिन्दु पर ज्यादातर बालिकाओं ने अपने विचार व्यक्त किये हैं जबकि "सर्वाधिक असहमत" बिन्दु पर पुस्तकीय अभाव से सम्बन्धित प्रश्न पर ज्यादातर बालिकाओं ने अपने विचार व्यक्त किये हैं ।

तालिका संख्या–2: सामाजिक कारकों का बालिकाओं की मनोवृत्ति पर प्रभावः

एकांश	सर्वाधिक सहमत	सहमत	अनिश्चित	असहमत	सर्वाधिक असहमत	कुल छात्राएं
3	20	38	8	34	0	100
4	2	37	12	28	24	100
5	28	50	8	8	6	100
18	8	50	10	18	14	100
25	8	64	4	18	6	100
योग	66	236	42	106	50	500
प्रतिशत	13.2%	47.2%	8.4%	21.2%	10%	

तालिका संख्या 2 के प्राप्तांकों से स्पष्ट होता है कि सामाजिक कारणों में पारिवारिक जिम्मेदारियों से सम्बन्धित प्रश्न पर "सर्वाधिक सहमत" बिन्दु पर ज्यादातर बालिकाओं ने अपने विचार व्यक्त किये हैं जबकि "सर्वाधिक असहमत" बिन्दु पर शादी–विवाह सुविधाओं से सम्बन्धित प्रश्न पर ज्यादातर बालिकाओं ने अपने विचार व्यक्त किये हैं ।

तालिका संख्या–3: विद्यालयीय कारकों का बालिकाओं की मनोवृत्ति पर प्रभावः

एकांश	सर्वाधिक सहमत	सहमत	अनिश्चित	असहमत	सर्वाधिक असहमत	कुल छात्राएं
6	64	32	2	2	0	100
7	4	38	24	28	6	100
9	12	46	2	20	20	100
10	0	36	0	48	16	100
21	28	38	14	20	0	100
27	12	58	14	10	6	100
28	64	36	0	0	0	100
29	52	40	4	4	0	100
30	62	34	2	0	2	100
32	78	18	0	4	0	100
योग	376	376	62	136	50	1000
प्रतिशत	37.6%	37.6%	6.2%	13.6%	5%	

तालिका संख्या 3 के प्राप्तांकों से स्पष्ट होता है कि विद्यालयीय कारणों में पाठ्यक्रम में संस्कृति ज्ञान सम्बन्धित प्रश्न पर "सर्वाधिक सहमत" बिन्दु पर ज्यादातर बालिकाओं ने अपने विचार व्यक्त किये हैं जबकि "सर्वाधिक असहमत" बिन्दु पर प्रशिक्षित शिक्षकों के अभाव सम्बन्धित प्रश्न पर ज्यादातर बालिकाओं ने अपने विचार व्यक्त किये हैं।

तालिका संख्या–4: पाठ्यक्रम सम्बन्धित कारकों का बालिकाओं की मनोवृत्ति पर प्रभावः

एकांश	सर्वाधिक सहमत	सहमत	अनिश्चित	असहमत	सर्वाधिक असहमत	कुल छात्राएं
1	38	56	4	2	0	100
8	4	16	16	46	18	100
11	38	50	4	6	2	100
12	52	42	0	4	2	100
13	2	10	4	42	42	100
14	10	52	14	22	2	100
15	2	54	4	34	6	100
16	6	38	10	30	16	100
17	28	62	6	4	0	100
19	8	38	4	32	18	100
20	6	52	16	14	12	100
26	18	26	8	28	20	100
योग	212	496	90	264	138	1200
प्रतिशत	17.66%	41.33%	7.5%	22%	11.5%	

तालिका संख्या 4 के प्राप्तांकों से स्पष्ट होता है कि पाठ्यक्रम सम्बन्धित कारणों में परिश्रम पूर्वक पढ़ कर पास होने से सम्बन्धित प्रश्न पर "सर्वाधिक सहमत" बिन्दु पर ज्यादातर बालिकाओं ने अपने विचार व्यक्त किये हैं जबकि "सर्वाधिक असहमत" बिन्दु पर बोर्ड परीक्षा से मान्सिक दबाव सम्बन्धित प्रश्न पर ज्यादातर बालिकाओं ने अपने विचार व्यक्त किये हैं।

माध्यमिक शिक्षा के प्रति बालिकाओं की मनोवृत्ति को प्रभावित करने वाले कारणों का तुलनात्मक विश्लेषण

तालिका संख्या 5 के प्राप्तांकों से स्पष्ट होता है कि "सर्वाधिक सहमत" बिन्दु पर आर्थिक, सामाजिक, विद्यालयीय तथा पाठ्यक्रम सम्बन्धित कारकों पर क्रमशः 37.2, 13.2, 37.6 तथा 17.66 प्रतिशत बालिकाओं ने अपने विचार व्यक्त किए हैं

तालिका संख्या–5ः आर्थिक, सामाजिक ,विद्यालयीय एवं पाठ्यक्रम सम्बन्धित कारण सम्बन्धित संयुक्त तालिकाः

क्षेत्र	सर्वाधिक सहमत	सहमत	अनिश्चित	असहमत	सर्वाधिक असहमत
आर्थिक	37.2	30.4	4.8	18	9.6
सामाजिक	13.2	47.2	8.4	21.2	10
विद्यालय	37.6	37.6	6.2	13.6	5
पाठ्यक्रम	17.66	41.33	7.55	22	11.5
योग	105.66	156.53	26.95	74.8	36.1

जबकि "सर्वाधिक असहमत" बिन्दु पर क्रमशः 9.6, 10, 5 तथा 11.5 प्रतिशत बालिकाओं ने अपने विचार व्यक्त किए हैं।

तुलनात्मक रूप में देखा जाए तो आर्थिक, सामाजिक, विद्यालयीय तथा पाठ्यक्रम सम्बन्धित कारकों में "सर्वाधिक सहमत" बिन्दु पर ज्यादातर बालिकाओं ने विद्यालयीय कारकों (37.6 प्रतिशत) पर अपने विचार व्यक्त किये हैं जबकि "सर्वाधिक असहमत" बिन्दु पर ज्यादातर बालिकाओं ने पाठ्यक्रम सम्बन्धित कारकों (11.5 प्रतिशत) पर अपने विचार व्यक्त किए हैं।

परिणाम एवं उसकी व्याख्या

प्रस्तुत अध्ययन के परीक्षण के प्रशासन से प्राप्त आँकड़ों का सांख्यिकीय विश्लेषण करने के पश्चात् परिणाम प्राप्त हुए कि माध्यमिक शिक्षा के प्रति अध्ययनरत ग्रामीण बालिकाओं की मनोवृत्ति पर यथा–सामाजिक, आर्थिक, विद्यालयीय एवं पाठ्यक्रम सम्बन्धी कारणों का प्रभाव पड़ता है।

प्रस्तुत शोध में प्राप्त परिणाम दर्शाते हैं कि माध्यमिक शिक्षा ग्रहण कर रही बालिकाओं पर आर्थिक, सामाजिक, विद्यालयीय एवं पाठ्यक्रम सम्बन्धी कारणों का प्रेक्षित प्रभाव संयोगवश नहीं है, अर्थात् उक्त कारणों का प्रभाव बहुत ज्यादा उनकी मनोवृत्ति निर्धारित करने में पड़ता है। बहुत सी बालिकाएँ ऐसी हैं जो विभिन्न आर्थिक कारणों से शिक्षा में रूचि नहीं लेती। जैसे–पुस्तकों की पर्याप्त अनुपलब्धता, प्राईवेट स्कूलों में अधिक फीस, कठिन विषयों के प्रशिक्षित अध्यापक की अनुपलब्धता होने से कोचिंग ट्यूशन की समस्या इत्यादि कई ऐसे कारण हैं जो धन की समस्या से जुड़े हुए हैं जिनकी पूर्ति में वे अपने को अक्षम पाती हैं।

इसी प्रकार सामाजिक कारण भी हैं जो बालिका शिक्षा को प्रभावित करते हैं जैसे– कम उम्र में विवाह व्यवस्था, बेटा–बेटी में फर्क, सहशिक्षा प्रदान करने वाले स्कूलों में लड़कियों को पढ़ाने में अभिभावकों की झिझक, घरेलू कार्यों की अधिकता इत्यादि कई ऐसे रीति–रिवाज, अंधविश्वास जैसे कारण भी बड़ी होती हुई लड़कियों के शिक्षा प्राप्त करने में बाधक बने हुए हैं।

इसी प्रकार विद्यालयीय कारण भी कई हैं जिनके कारण बालिकाएँ विद्यालयीय शिक्षा पर ज्यादा ध्यान केन्द्रित नहीं कर पाती हैं। जैसे – प्रशिक्षित शिक्षकों का अभाव, निकटस्थ विद्यालयों का अभाव, अध्यापकों का कठोर व्यवहार, विद्यालय का कठोर अनुशासन इत्यादि कई ऐसे कारण हैं जो बालिकाओं

की माध्यमिक शिक्षा के प्रति उनकी मनोवृत्ति निर्धारण में अपनी भूमिका अदा करते हैं। इसी क्रम में माध्यमिक शिक्षा की पाठ्यक्रम सम्बन्धी भी कुछ ऐसी समस्यायें हैं जो उनकी मनोवृत्ति को प्रभावित करती हैं। क्योंकि कभी–कभी पाठ्यक्रम उनके अनुरूप, 'जो उनके भावी जीवन के लिए सार्थक हो' का अभाव भी उनकी इच्छा एवं रूचि को कम कर देता है। जैसे– पाठ्यसहगामी क्रियाओं का अभाव, घरेलू क्रिया–कलाप सम्बन्धी ज्ञान, सामान्य ज्ञान, कम्प्यूटर शिक्षा इत्यादि नवीन ज्ञान का अभाव भी उनकी इच्छा एवं रूचि को कम कर देता है। साथ ही बोर्ड परीक्षा सम्बन्धी डर, पाठ्यक्रम का जल्दी–जल्दी बदलना, जिससे बाजारों में पुस्तकों की अनुपलब्धता एवं देर से पढ़ाई शुरू होना तथा जल्दी परीक्षाओं का होना भी उनकी मनोवृत्ति को प्रभावित करता है।

निष्कर्ष

प्रस्तुत अध्ययन के निष्कर्ष के रूप में कहा जा सकता है कि माध्यमिक शिक्षा के प्रति अध्ययनरत बालिकाओं की मनोवृत्ति पर आर्थिक, सामाजिक, विद्यालयीय एवं पाठ्यक्रम सम्बन्धी पक्षों का बहुत अधिक प्रभाव पड़ता है। ये सभी कारण शिक्षा को काफी हद तक प्रभावित कर रहे हैं। इन्हीं समस्याओं के कारण ही वो उस हद तक अपना विकास शिक्षा के क्षेत्र में आज भी नहीं कर पा रही हैं जितना कि होना चाहिए। अध्ययन का परिणाम बताता है कि यदि बालिकाओं को भी उचित अवसर प्रदान किया जाय तो वो भी प्रत्येक क्षेत्र में अपना विकास अच्छे ढंग से कर सकती हैं।

अध्ययन का शैक्षिक महत्व एवं सुझाव

प्रस्तुत शोध अध्ययन 'सुलतानपुर जिले के लम्भुआ ब्लाक में माध्यमिक शिक्षा के प्रति अध्ययनरत ग्रामीण बालिकाओं की मनोवृत्ति का अध्ययन' नामक शीर्षक के अन्तर्गत सम्पन्न किया गया। शोध अध्ययन के परिणाम शिक्षा के गुणात्मक विकास एवं प्रगति में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करते हैं। वर्तमान शोध अध्ययन के परिणाम उन शिक्षा शास्त्रियों, समाज सुधारकों, शिक्षाविदों, परामर्शदाताओं, सलाहकारों, शिक्षा निदेशकों का मार्गदर्शन करते हैं जो माध्यमिक शिक्षा की कई ऐसी समस्याओं को अनदेखा करते हैं एवं माध्यमिक विद्यालयों सम्बन्धी सभी नियमों का निर्माण करते हैं। उनके पाठ्यक्रम का निर्माण एवं संशोधन करते हैं तथा माध्यमिक शिक्षा प्राप्त करने वाली बालिकाओं के भावी जीवन को उद्देश्ययुक्त बनाने में रूचि रखते हैं। बालिकाओं के लिए माध्यमिक शिक्षा बहुत ही महत्वपूर्ण होती है। शिक्षा ही बालक–बालिकाओं के सर्वांगीण विकास करने में सहायक होती है। अतः बालिकाओं के माध्यमिक शिक्षा प्राप्त करने तक अभिभावक, अध्यापक एवं समाज सभी की जिम्मेदारी बनती है। क्योंकि बालिकाएँ शिक्षित होकर स्वयं के साथ दो परिवारों तथा देश के भविष्य को शिक्षित करती हैं।

भावी अध्ययन के निमित सुझाव

प्रस्तुत अध्ययन के द्वारा माध्यमिक स्तर की बालिकाओं की वास्तविक शैक्षिक स्थिति उजागर हुई है एवं समस्या का मूल कारण पता चल पाया है। प्रस्तुत समस्या पर अभी और अधिक विस्तृत ढंग से अध्ययन करने की आवश्यकता है। परन्तु समस्या को समयाभाव के कारण और अन्य कई दृष्टिकोण से सम्पन्न नहीं किया जा सकता है। अतः प्रस्तुत समस्या से सम्बन्धित कुछ अन्य समस्यायें निम्नवत् हैं जिन पर भावी शोधकर्ताओं द्वारा अध्ययन किया जा सकता है–

- प्रस्तुत अध्ययन को ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों के माध्यमिक विद्यालयों पर किया जा सकता है।

- ❒ प्रस्तुत शोध अध्ययन में बालकों को भी सम्मिलित किया जा सकता है।
- ❒ प्रस्तुत शोध अध्ययन को उच्चतर माध्यमिक स्तर पर भी किया जा सकता है।
- ❒ प्रस्तुत अध्ययन सीमित जनसंख्या के कारण कम विश्वसनीय हो पाया है अधिक विश्वसनीय परिणाम के लिए समय सीमा, जनसंख्या तथा प्रतिदर्श को बढ़ाकर अध्ययन किया जा सकता है।
- ❒ प्रस्तुत अध्ययन में भौगोलिक, राजनीतिक एवं धार्मिक कारणों को भी शामिल किया जा सकता है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

[1] पाण्डेय, के.पी. (2008): शैक्षिक अनुसंधान, विश्वविद्यालय प्रकाशन वाराणसी, तृतीय संस्करण

[2] पाण्डेय, के.पी. (2007): शिक्षा और मनोविज्ञान में सांख्यिकी, विश्वविद्यालय प्रकाशन वाराणसी, सप्तम् संस्करणः 2007 ई0

[3] पाठक, पी.डी. (2007): भारतीय शिक्षा और उसकी समस्यायें, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा–2, इक्कीसवां संस्करण

[4] गुप्ता, एस.पी. एवं गुप्ता, अलका (2010): उच्चतर शिक्षा मनोविज्ञान, शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद, संस्करण 2010।

[5] सिंह, अरूण कुमारः मनोविज्ञाान, समाजशास्त्र तथा शिक्षा में शोध विधियाँ, मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली।